

आंतरिक यात्रा

आंतरिक यात्रा का मतलब क्या है? त्रिगुणों का अधिपति बनने के लिए, आंतरिक यात्रा करके आत्मस्थिति तक पहुंचना ही आंतरिक यात्रा कहलाती है। आंतरिक यात्रा कौन कर सकता है? जिन व्यक्तियों ने रजो, तमो और सत्वगुण से संबंधित जन्म लिए, वे आंतरिक यात्रा कर सकता है।

इन तीन प्रकार के जन्मों में, हमने समस्याओं को मारने या समस्याओं से भागने या समस्याओं को बदलने की कोशिश की, लेकिन अंत में हमें विफलता मिली और समस्याओं के माध्यम से ही हमारी मृत्यु हो गई। इन तीन प्रकार के जन्मों में हम त्रिगुण के गुलाम थे, मतलब हम उनके नियंत्रण में थे, त्रिगुणों कि निर्देशों के अनुसार खेले, उन्हें नेतृत्व करने में असमर्थ रहे, और अंत में हमने उन जन्मों को अधूरेपन या दुख के साथ समाप्त किया। इन तीन जन्मों के अनुभवों के बाद ही हमें "त्रिगुणाधिपति" बनने के लिए, आंतरिक यात्रा करने की पात्रता मिलती है।

त्रिगुणों की सभी लक्षणों से संबंधित जन्म लेने के बाद ही, व्यक्ति, त्रिगुणों के अधिपति बनने के योग्य हैं। यहाँ लक्षणों का अर्थ: काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, ईर्ष्या और उनके विरोधी योगदान, दया, उदारता, वैराग्य, सौम्यता और प्रेम। तो जिस व्यक्ति ने त्रिगुणों के जन्म लिया है, वह इन त्रिगुणों को मिलाने के लिए शुद्ध सात्विक जन्म लेकर, इन सभी को एक साथ उपयोग करके सृजन-संचालन-विनाश करते हुए, त्रिगुणाधिपति या आत्मा बन जाता है।

शुद्ध शक्ति में त्रिगुण समान मात्रा में मिलकर एकजुट होकर रहता है! इसलिए अगर आपके अंदर बुरी शक्तियाँ हैं, तो खुशी महसूस करें, क्योंकि केवल अच्छे-बुरे-तटस्थ शक्तियाँ मिलने के बाद ही, आप शुद्ध होकर दिव्य हो जाएंगे। मतलब यहाँ समस्या विभाजन है, और समाधान मिलन है। इसलिए मेरे पास जो ज्ञान है, उसके अनुसार मैं यह कहना चाहता हूँ कि, जो त्रिगुणाधिपति बनना चाहते हैं, वह न्यूएनर्जी साधना करने की योग्य है। जो लोग इस दृष्टिकोण के साथ जीना चाहते हैं कि, मैं जिस गुणों को प्यार करता हूँ वह ही सही है, बाकी सब गलत है, वे इस साधना करने की योग्य नहीं हैं।

अब तक हमने केवल बाहर ही समस्याओं के समाधान खोजे। हमने माना लिया कि, कठिनाइयाँ दूसरों की वजह से ही आरही है, और हमने उन्हें बदलने की कोशिश की। लेकिन समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं, घटती नहीं। इसका कारण: खुद को बदले बिना, दूसरों को बदलने की कोशिश करना; बाहरी कारण छोड़कर, अंदर का कारण नहीं खोजना।

पृथ्वी पर हमारा आने का लक्ष्य: मैं ईश्वर हूँ, यह जानने के लिए। इसलिए हमको ही बदलना होगा। मतलब हमें मानव से दिव्य मानव में, जीवात्मा से आत्मा परमात्मा में बदलना होगा। इसलिए जो लोग न्यूएनर्जी में आते हैं, वे अपनी समस्याओं का समाधान केवल तभी खोज सकते हैं, जब दूसरों को बदलना छोड़कर, वे खुद बदलते हैं।

यहां जीवात्मा, आप में रहने वाले एक ही गुण को पकड़कर, सिर्फ उसी गुण में व्याप्त होकर, बाकी गुणों को तिरस्कार करती है! आत्मा, आपमें रहने वाले सारे गुणों को एक साथ उपयोग करके, आपके अंदर रहने वाले सारे शरीरों, सारे अंग, सारे अवस्थाओं में व्याप्त होकर रहता है! परमात्मा निराकार और सर्वव्यापक भी है! सारे ब्रह्मांड में, ब्रह्मांड में रहने वाले सारे आकारों में परमात्मा फैला हुआ है, और ब्रह्मांड के सारी आकार भी वो ही है!

आंतरिक यात्रा करने के लिए, आपको कहाँ से शुरू करना है? पहले अपने जीवन में हमें क्या बदलाव लाना है? खुशहाल परिस्थितियों में बदलाव लाने की जरूरत नहीं। हमें जहां खुशी नहीं मिल रही है, उसमें हमें बदलना होगा। मैं उन्हें समस्या या निगेटिव कहता हूँ। मैंने उन्हें अपने गुरु के रूप में महसूस किया और अपनी आंतरिक यात्रा शुरू की। इसलिए मैं आपको सलाह देता हूँ कि, इसी तरह से आप भी अपनी आंतरिक यात्रा शुरू करें। मतलब अशाश्वत समस्याएं जिनका हमें समाधान नहीं मिल रहा है, उदाहरण के लिए घुटने कि दर्द शरीर में शाश्वत रहेगा, यह हम मानने की वजह से, शाश्वत दिव्यता अंदर छुपा हुआ है।

तो समस्या आने पर क्या करें? पहले जिम्मेदारी स्वीकार करें कि, जाने-अनजाने में मैंने यह समस्या पैदा की है, और मैं समस्या को जैसा है वैसा ही स्वीकार करता हूँ। फिर संबंधित इच्छा रखो। क्योंकि इच्छा रखखो उसके अनुसार साधना करने से ही, आपका जीवन आप से चुनी गई इच्छा की तरफ बढ़ेगा, भाग्य के अनुसार नहीं। इसलिए ऐसी इच्छा रखो: समस्याओं को असंतोष से अनुभव करने की स्थिति से, दैवीय रूप से या अधिपति के रूप में अनुभव करने की स्थिति कि तरफ; और सकारात्मक को सामान्य रूप से अनुभव करने की स्थिति से, दैवीय रूप से या अधिपति के रूप में अनुभव करने की स्थिति कि तरफ ले जाने की इच्छा रखना है। यह भी इच्छा रखें कि मुझे आत्मा की तरह सभी हिस्सों में फैलना है, फिर समस्या को नजरअंदाज करते हुए, जैसा मैंने पिघलजाओ टॉपिक में कहा, वैसा आप अकेले पिघल कर शुद्ध होने के बाद, अंदर व्याप्त होकर, संभव समय तक उस स्थिति में रहें।

तब आपको परिणाम मिल सकता है। यदि आपको परिणाम नहीं मिला, तो समस्या से संबंधित नकारात्मक विचार और भावनाएँ आएंगी। वे आते ही उन पर नजर रखें। ये विचार या भावनाएँ तीन प्रकार की होती हैं - समस्या से भागना या समस्या को मारना या समस्या को बदलना। ये सभी पिछले जीवन या पिछले जन्मों की अनुभव द्वारा, पैदा हुआ विश्वास से संबंधित है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि, हम एक जन्म में कैंसर से मर गए। यह अनुभव और इससे संबंधित लक्षण हमारे अंदर संग्रहीत हो जाएंगे। इसके कारण कैंसर के माध्यम से हम मर जाएंगे यह विश्वास हमारे अंदर स्थिर होकर, इसके संबंधित विचार हमें आएंगे। अब नया विश्वास रखो कि, यह कैंसर मुझे आत्मस्थिति तक ले जाएगा। यह भी विश्वास रखें की सब कुछ मुझे आत्मा स्थिति तक ले जाएगा। न्यूएनर्जी में आने के बाद, हमारा पहला लक्ष्य है: पिछले कर्मों को हील करना या डिलीट करना या उन्हें स्वच्छ करना। क्योंकि चमत्कारी भविष्य, भूतकाल को डिलीट करने पर ही निर्भर होता है। मतलब अगर आप मन को मेमोरी

बैंक की तरह इस्तेमाल करते हैं, तो वहीं पिछले संगठन बार-बार प्रकट होंगे, इससे आप बोर हो जाएंगे। लेकिन अगर आप अपने मन को शुद्ध रखते हैं, तो आप चमत्कार देखेंगे।

इसलिए आपको पिछले विचारों या भावनाओं को पूरी तरह से अनुभव करना होगा। पिछले जन्मों में सही-गलत की स्थिति में रहने की वजह से यह भावनाएं पैदा हुए; ये दूसरों के कारण नहीं बने हैं। अन्य लोग अपने शब्दों के माध्यम से या व्यवहार के माध्यम से, आपमें लंबे समय से छिपी हुई भावनाओं को खोजने में मदद कर रहे हैं, और उस भावनाओं या विचारों को जैसा है वैसा ही स्वीकार करें। फिर उन्हें अगले स्थिति में ले जाने का अनुरोध करें। तब वे भागने की स्थिति से - मारने की स्थिति की तरफ; मारने की स्थिति से - बदलने की स्थिति की तरफ; बदलने की स्थिति से - जैसा है वैसा ही स्वीकार करने की स्थिति की तरफ आप को लेजाती है।

यदि आप उसे अगली स्थिति में ले जाने का अनुरोध नहीं करते, तो आपके दिमाग में लगातार वही विचार आते रहेंगे। इसलिए उनसे एक दोस्त या शिष्य की तरह रहें, और आपको आगे ले जाने का उनसे अनुरोध करें। कुछ दिन शब्दों के माध्यम से अनुरोध कीजिए, उसके बाद उस भाव में रहें। केवल यह जांचें कि आप अगले स्थिति में पहुंचे हैं या नहीं।

उदाहरण के लिए यदि आपको दर्द है, तो अन्य चीजों में उलझने और दर्द को नजरअंदाज करने का विचार आ सकता है। फिर दर्द से बचने की कोशिश करें। यदि परिणाम आता है, तो ठीक है। अन्यथा भागने का विचार को जैसा है वैसा ही स्वीकार करके, अगले स्थिति तक ले जाने के लिए उसी विचार से अनुरोध कीजिए। उसके बाद आपको एक और विचार आ सकता है कि, दवाई का उपयोग करें और उस दर्द को मार दें। फिर बताएं कि मैंने दवाई का उपयोग करके इसे मारने की कोशिश की थी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, इसलिए मार विचार को जैसा है वैसा ही स्वीकार करके, अगले स्थिति तक ले जाने के लिए उसी विचार से अनुरोध कीजिए। उसके बाद आपको एक और विचार आ सकता है कि, दर्द के साथ अच्छी तरह से बात करके उसे बदलने की कोशिश करें। फिर उस दर्द को बदलने की कोशिश करो, यदि परिणाम आता है तो ठीक है, नहीं तो बदले विचार को जैसा है वैसा ही स्वीकार करके, अगले स्थिति तक ले जाने के लिए कहे, जहां आप इसे खुशी के साथ दर्द का अनुभव कर सकते हैं।

यदि मन भागने, मारने और बदलने प्रयासों को जारी रखने के लिए मजबूर करे, तो आप उसके साथ बहस करके इसे अस्वीकार करे। मन से भोले की, आपके द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करके मैं विफल हुआ, इसलिए यदि आप एक नया प्रयास करने के लिए सहयोग नहीं करते, तो चुप रहें और देखें कि क्या होता है। लेकिन महसूस करें कि, मन के साथ बहस करने की शक्ति तभी मिलती है, जब आप उसका सुझाव जागरूकता के साथ पालन करते हैं। यदि आपको शक्ति नहीं मिलती, तो युद्ध टॉपिक में जैसा मैंने कहा वैसा करें।

दर्द का अनुभव करते समय, महसूस करें कि, आप आपातकालीन स्थिति में हैं। मतलब यह है कि यह धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, और गलत-सही का विवेक को अलग रखना है। क्योंकि

रोग का कारण मिट जाने पर हि, रोग मिट जाता है, अन्यथा रोगी की मृत्यु हो सकती है। इसलिए आप अपने पिछले जन्मों के पात्रों को, अंदर खुशी से अनुभव करने के बाद ही दर्द पिघलता है, अन्यथा यह आपको मारने कि संभावना है। इसलिए अपने ऊपर आप ही ने जो नियम लगाया, उन नियमों को अलग रखें, और डांटना, रोना या किसी अन्य तरीके उपयोग करके, दर्द को दूर करें, भले ही वह आपको गलत लगे।

आम तौर पर जब आप अकेले होते हैं, तभी दर्द आता है। यदि आप अस्वीकार करके उसे अंदर दबाते हैं, तो निश्चित रूप से यह आपका दुश्मन बन के बदला लेता है। जब आप दूसरों के साथ खुश रहना चाहते हैं, तो ऐसे समय में आकर आपको तंग करके, आपके व्यवहार को अजीब बनाके, दूसरों से अपमानित करवाता है। भले ही आप मदद के लिए कितना भी प्रार्थना करें, फिर भी समय आपकी मदद नहीं करेगा। इसलिए शक्तियों को दबाएं नहीं, मार्गदर्शक टॉपिक में दिए गए सूचना के अनुसार शुद्धि कि प्रक्रिया जारी रखें।

इस तरह हम सभी ज्ञात प्रयास करके असफल होने के बाद ही हम समस्या को, जैसा है वैसा ही स्वीकार करके, स्वाभाविक रूप से समस्या को आत्मसमर्पण करेंगे। क्योंकि समस्या का प्रभाव हम पर है, मतलब यहाँ समस्या उच्च स्थिति में है, हम निम्न स्थिति में हैं। तो इस स्थिति के लिए सही उपाय, उच्च के सामने आत्मसमर्पण करना। हालांकि शुरू में आप महसूस करेंगे कि, मुझे इस तुच्छ नकारात्मक शक्ति के सामने आत्मसमर्पण क्यों करना चाहिए, लेकिन आत्मसमर्पण करने के बाद जब समस्या हल होती है, और आप में चमत्कारी परिवर्तन देखने के बाद, जब भी कोई अन्य समस्या उत्पन्न होती है, तब आप अपनी अहंकार को जल्दी छोड़कर, उस समस्या को आत्मसमर्पण कर देंगे।

तब वह समस्या, आपको मार देती है, मतलब जो खुद को समस्या के रूप में महसूस कर रहा है, उस अशुद्ध जीवात्मा को मार देती है। तब अशुद्ध जीवात्मा गायब होकर, केवल समस्या रहती है। कुछ समय बाद, उसमें से स्वाभाविक रूप से "शुद्ध आत्मा या अधिपति" जन्म लेता है। यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए। यह जीवात्मा द्वारा नहीं किया गया है। यह तभी होता है जब आप कुछ किए बिना, उस दर्द में खुद को पिघलने देते हैं। यहां आपको संदेह हो सकता है कि, दर्द आपको शुद्ध कैसे करेगा? चूंकि हम मान रहे हैं कि परमात्मा दर्द के रूप में आया है, इसलिए यह ईश्वरीय समस्या आपके राग-द्वेष को अलग करके, आपको शुद्ध बना सकती है।

जब हम मारने, बदलने, भागने की स्थिति में होते हैं; तब हम तैरना सीखने के पहले चरण में कैसे स्थिति में होंगे, वैसा ही यहां रहेंगे। मतलब हम डर और तनाव के साथ डूबते और तैरते हैं। जब अधिपति इस गडबड से जन्म लेता है, तब वह पानी पर खुशी से तैरता है। उसे कोई डर नहीं रहता, क्योंकि समस्या में बिना डूबे उसमें कैसे तैरना वह जानता है।

जब भी नई समस्या आती है, मलिन जीवात्मा पिघल जाती है और अधिपति जन्म लेते हैं, क्योंकि हमारा वर्तमान ज्ञान काम नहीं करेगा। इसलिए यहाँ देखने वाली बात यह है: हमारे पास जो अनुभवज्ञान है, वह दूसरों के लिए काम करता है, हमारे लिए नहीं। क्योंकि हम इस

धरती पर आने का उद्देश्य: हमारे अंदर कि शक्तिओं के विकास के लिए सहयोग करना, ईश्वर से नया ज्ञान प्राप्त करके नए नए अनुभव प्राप्त करना।

अधिपति

इस अधिपति का जन्म शुद्ध चेतना और शुद्ध शक्ति के संयोजन से होता है। वह सही-गलत, अच्छे-बुरे की भावना के बिना, एक छोटे बच्चे की तरह रहता है। वह निराकार स्थिति में रहकर अंदर हर हिस्सों में फैलता है। वह सभी को दिव्य रूप में देखकर, विरोधी ताकतों के साथ खुशी से खेलता है। वह सब को हल्के में लेकर, हमेशा इस भाव में रहता है कि, मैं अलग हूँ और समस्या अलग है। जब यह अधिपति जन्म लेता है, तब समस्या अपने आप बदल ते हुए, हमारी इच्छा पूर्ति की ओर बढ़ती है।

गत का प्रभाव अधिपति पर नहीं होगा, इसलिए वह शांतिपूर्ण रहकर, समस्या रूप में रहने वाले आत्मा से आने वाले निर्देशों और संदेशों का पालन करता है। जैसा कि मार्गदर्शक विषय में कहा गया है, अधिपति साक्षी स्थिति में रहते हुए, समस्या के लक्षणों का अनुभव करता है। इसीलिए मैंने शुरू में ही कहा था कि, नकारात्मक शक्तियों को दिव्य रूप से अनुभव करने की इच्छा जताने कि। इच्छा पूर्ति के बाद, आने वाली शुद्ध सकारात्मक शक्तियों को भी, दिव्य रूप से अनुभव करें।

आपको संदेह हो सकता है कि, अधिपति के जन्म के बाद समस्या गायब होकर आनंद कैसे आएगा? उत्तर है: यह अधिपति अमर है, उसकी कोई मृत्यु नहीं है। बिना किसी हिचकिचाहट के, वह किसी भी समस्या में स्थिर रहता है। उसको सफलता-असफलता नहीं होती, क्योंकि वह केवल एक ही है। इसका अर्थ है कि, जो कुछ अंदर है, वह सब उसकी शक्ति के रूप है, इसलिए उसके खिलाफ जीतने के लिए कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है। हमेशा वह शाश्वत रहकर, अशाश्वत चीजों के साथ या हमेशा परिवर्तनकारी शक्तियों के साथ खेलता है। खेलने के बाद सारी अशाश्वत चीजों को नष्ट करके, उसे अंदर विलीन कर लेता है।

इसके अलावा अधिपति को लगता है कि, अंधेरा=संध्या=रोशनी की तरह, विरोधी एक के बाद एक आते-जाते हैं। और उन्हें यह भी प्राकृतिक जागरूकता होती है कि, हमेशा उनका संघ माया=दिव्यमाया=दिव्य के साथ आसानी से होता है। यहाँ परमात्मा को छोड़कर, शेष चीजें अशाश्वत हैं। शरीर, मन, हृदय, पिछले जन्म, बाहरी वस्तुओं, बाहरी मुद्दों आदि अशाश्वत हैं, मतलब हमेशा परिवर्तन होते रहते हैं। हम उन चीजों से पीड़ित हो रहे हैं, जो हमेशा केवल परिवर्तनशील हैं। हमेशा केवल परिवर्तनशील चीजों के साथ हम संबंध रखने की वजह से, हम दर्द का अनुभव करते हैं।

लेकिन ये सभी अशाश्वत चीजें, शुद्ध शक्ति से ही बनी हैं। अधिपति शुद्ध है, इसीलिए वह हर चीज में शुद्ध शक्ति की पहचान कर सकता है, और वह हर रूप को शुद्ध रूप में देख सकता है। इसलिए अधिपति स्थिर आत्मा के साथ संबंध रखें, अशाश्वत समस्या और वह जिन से बनता है उस शुद्ध शक्ति दोनों को एक साथ अनुभव करता है। इस तरह वह तब तक अभ्यास करना जारी रखता है, जब तक केवल शुद्ध शक्ति शेष रहती है।

जैसा कि धर्म अध्याय में कहा गया है, जब विचार आते ही, भले ही आप तीनों को चुनते हैं; लेकिन शुरू में आप पक्षपात रवैया में रहकर, आप विरोधों के बीच किसी एक पक्ष में रहेंगे और अन्य पक्षों से द्वेष करेंगे। उदाहरण के लिए आप हमेशा स्वस्थ रहने की इच्छा से बंधन रख के, बीमारी और तटस्थ से द्वेष करेंगे। इस वजह से, बीमारी और तटस्थ आपकी मदद नहीं करेंगे। यहां तटस्थ का अर्थ है, शरीर में गांठ रहती है, वह आपको परेशान नहीं करती लेकिन हमें स्पष्टता नहीं होगी कि गांठ रोग है या नहीं।

रिश्ते के मामले में, पक्षपात रवैये के साथ हम इस भावना में रहते हैं कि, मैं अकेला सही हूं, अन्य व्यक्ति गलत है। लेकिन यहां हमारा लक्ष्य जीत हासिल करना नहीं। हम त्रिगुण के अधिपति बनके, उनके साथ खेलकर, फिर उन्हें शुद्ध करके खुद भी शुद्ध होना है। इसलिए त्रिगुण का एक पक्ष रहकर यदि आप शेष को नफरत करके या नष्ट करके जीतना चाहते हैं, तो लक्ष्य तक पहुंचना असंभव है। यहां तक कि बीमारी-तटस्थ से, आओ और मुझ में एक हो जाने की निमंत्रण स्वास्थ्य देने पर भी, वे स्वास्थ्य के साथ एक नहीं होंगे।

वे एक दूसरे को समझ नहीं सकते, क्योंकि इन विरुद्ध शक्तियों का अपना अहंकार रहता है। मतलब एक रूप दूसरे रूप को समझ नहीं सकता; इसलिए समझें कि, न केवल रूप ही काफी नहीं बल्कि शुद्ध व्यक्ति भी होना चाहिए। मतलब अभिनेताओं के अलावा, निर्देशक भी होने चाहिए जो अभिनेताओं के बीच सहयोग पैदा करके उपयोग करें। मतलब केवल सूक्ष्म या शुद्ध शक्ति ही स्थूल पदार्थ में प्रवेश कर सकती है। इसलिए आप स्वास्थ्य का बंधन छोड़के, अधिपति पैदा होने के लिए, शुद्ध शरीर तैयार होने के लिए, सहयोग करना यहां आवश्यक है।

केवल अधिपति की उपस्थिति में, ये विरुद्ध शक्तियां अपने अहंकार, अपना ज्ञान छोड़कर अधिपति में एकजुट हो जाती हैं। क्योंकि यह अधिपति इन विरुद्ध अनुभवों को परमात्मा के रूप में महसूस करता है और उनके बीच कोई अंतर नहीं दिखाता है। वह इन विरुद्ध शक्तियों को शुद्ध रूप में देख के, एक दूसरे की महानता को समझ के, उन के बीच प्यार पैदा करने में सक्षम है। चूंकि विरुद्ध शक्तियों को पूर्ण ज्ञान मिलने की वजह से, अधिपति की उपस्थिति में, वे एक दूसरे का सहयोग करते हुए, एक साथ विकसित होते हैं, एक-दूसरे के लिए आश्रय बनके, एक साथ पिघल के शुद्ध हो जाते हैं।

जब आप शारीरिक समस्या के समाधान के लिए साधना करते हैं, तो अधिपति न केवल उस समस्या पर ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि वह उन सभी भूमिकाओं पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जिन्हें आप प्रतिदिन निभा रहे हैं। भूमिकाएं ठीक से वांछित, ठीक से पोषण नहीं होने की वजह से शारीरिक समस्या उत्पन्न होती है। इसलिए अधिपति शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और रिश्ता से संबंधित, आपके द्वारा निभाई गई सभी भूमिकाएं, साथ ही साथ दूसरों द्वारा सामना की गई भूमिकाओं को भी अधिपति याद करता है। फिर उन्हें उनके साथ जुड़ने के लिए आमंत्रित करके, उन्हें अधिपति अपने अंदर एकजुट करता है। यहां तक कि सबसे बुरे पात्रों को भी तलाश करके, अधिपति अपने अंदर एकजुट करता है। क्योंकि गत में शुद्ध शक्ति तीन विरोधी टुकड़ों में विभाजित होकर एक साथ जन्म लिया। इसलिए जब

इन टुकड़ों का पुनर्मिलन होने के बाद ही, वे शुद्ध हो जाते हैं। इसका मतलब गत डिलीट हो जाएगा। इच्छा को गहराई से समझने के लिए युद्ध अध्याय पढ़ें।

फिर आप मतलब अधिपति और आपकी साधना से बनी शुद्ध शक्ति दोनों, अंदर रहने वाले शुद्ध शक्ति और शुद्ध चेतना के साथ एकजुट हो जाते हैं। इसे हम शिव-शाक्त का मिलन कहते हैं। इस शिव-शक्ति या चेतना-शक्ति मिलन को आत्मा कहलाती है। इस तरह सब कुछ एकजुट हो जाने के बाद आप ब्रह्मानंद का अनुभव करेंगे। आत्मस्थिति में रहकर, यदि आप भौतिक समस्या को शुद्ध समाधान की इच्छा रखकर, इस शुद्ध शक्ति को अपने अंदर सभी भागों में फैलाते हैं, तो समस्या गायब हो जाती है। तब मैं भगवान हूँ, यह भावना स्थिर हो जाती है।

तब आपको अपने अंदर मौजूद हर चीज पर विश्वास रहेगा - शरीर, मन, हृदय, आत्मा और पिछले जन्म की भूमिकाएँ। आपने शुद्ध शक्ति को विभाजित करके एक भूमिका को चुनकर, बाकी को दुश्मन के रूप में देखने की वजह से समस्या पैदा हुई। युद्ध करते हुए इतने दिन आपने समस्या को जारी रखा, अब समस्या को हल करने के लिए, इन तीन टुकड़ों को फिर से मिलाके लय किया; इसलिए आप जान पाएंगे कि, आप अपने जीवन के ब्रम्हा-विष्णु-महेश्वरा हैं।

शुरू में आपको अधिपति के रूप में सब कुछ एकजुट करने के चरण में ही परिणाम मिलेंगे। लेकिन तुरंत आप आत्मा की ओर बढ़ने के बजाय भ्रम में पड़ जाएंगे। फिर से आप अधिपति बनके भ्रम से बाहर आते हैं। इस प्रकार साधना जारी रखने के बाद, माया और आत्मा के सहयोग से आप आत्मस्थिति तक पहुँचने के पात्र बन जाएंगे। आत्मसमर्पण अध्याय में कहा था कि, यदि समस्या अतीत है, तभी आप आत्मस्थिति तक पहुँचेंगे।

यह अभ्यास एक फिल्म बनाने जैसा है। फिल्म बनाते समय, एक निर्देशक होता है, जो सभी पात्रों को सृष्टि करता है। निर्देशक विरुद्ध भूमिकाएँ बनाके फिल्म बनाता है। शूटिंग पूरी होने के बाद, तुरंत अभिनेता यह सोचकर अपनी भूमिका भूल कर घर चले जाते हैं कि, हमने कुछ भी पाप-पुण्य नहीं किया। अगले दिन सुबह वे फिर से आते हैं और वही भूमिकाएँ निभाते हैं या नई भूमिकाएँ निभाते हैं।

उसी तरह, अब तक हमने तीन तरह की भूमिकाएँ निभाईं। अब उन्हें एकजुट करके भगवान तक पहुँचने का समय आ गया है। यदि आप जीतना चाहते हैं या सही-गलत स्थिति में रहना चाहते हैं तो, आपको केवल पात्रधारि बने रहना होगा, इसकी वजह से आप भगवान तक नहीं पहुँच सकते। इसलिए सही-गलत महसूस किए बिना, ऐसी भूमिकाओं को एकजुट करें, जो आपने निभाई है और दूसरों द्वारा सामना किए गए पात्रों को, मिलाकर डिलीट कर दीजिए, और दिन में कम से कम एक बार जितना हो सके उतना समय के लिए, सूत्रधार बनें।

यहां अहंकार का अर्थ है ज्ञान को विकसित किए बिना, मौजूदा ज्ञान के साथ रूप बनाके उसीमें रहना। यह सोचना भी अहंकार है कि, मैं सही हूँ और अन्य नहीं है। तो यह समझें

कि, जो व्यक्ति यह सोचता है कि, मैं संपूर्ण हूँ, अन्य संपूर्ण हैं और कुल ब्रह्मांड भी संपूर्ण है, वह त्रिगुणों का अधिपति बन जाता है।

दैनिक जीवन में केवल नकारात्मक समस्याओं के लिए इस साधना को सीमित न करें। भले ही आप अंदर सकारात्मक महसूस कर रहे हैं लेकिन यदि दिव्य अनुभूति नहीं है, तो इसको भी समस्या मानकर, मुझे अधिपति बनना है इसलिए आप सहायता कीजिए, ऐसा कहकर सकारात्मक के प्रति आत्मसमर्पण कीजिए। तभी आप हर रोज परमात्मा के साथ खुशी से रह पाएंगे। इसलिए अपने आप को अधिपति के रूप में बदलने के लिए, जो कुछ भी आपके पास है, उसे ईश्वरीय रूप मानें और उसके प्रति समर्पण करें और जीवन का आनंद लें।

अनुभव - एक बार एक सज्जन ने मुझे मैसेज किया - जब आप मेरी पत्नी के गुरु हैं, तो बाहरी जीवन में मेरी पत्नी दूसरों के साथ कैसे रहें, यह सिखाना आपकी जिम्मेदारी है। तब मुझे गुस्सा आया और मुझे लगा कि, यह क्या है, मेरा काम केवल यह ज्ञान को बांटना, अगर उसने अभ्यास नहीं किया तो मेरी गलती क्या है? यह समस्या मैंने ही सृष्टि किया ऐसा जिम्मेदारी लेने के बाद, मुझे यह संदेश मिला: एक गुरु होने के नाते, आपने उसे गत में मार्गदर्शन किया; चूँकि उसने आपके निर्देशों का पालन नहीं किया था, आप तटस्थ बने रहे। लेकिन आपने तीन टुकड़ों: मुझे सिखाना चाहिए-मुझे सिखाना नहीं चाहिए-तटस्थ को एकजुट नहीं किया। इसीलिए समस्या बाहर शिकायत रूप में आपके सामने आई। इस संदेश को प्राप्त करने के बाद, मैंने उसे अंदर धन्यवाद दिया, क्योंकि उसके माध्यम से ही अंदर अटका हुआ पिछले कर्म को मैं जान पाया। उन तीन टुकड़ों को एकजुट करने के बाद, उसका पति भी मेरा दोस्त बन गया। मतलब जब तक आप अपने पिछले कार्यों को डिलीट नहीं करते, तब तक समस्या बनी रहेगी।

एक और अनुभव फेसबुक ग्रुप्स में मैं जो लिखता हूँ उस विषयों को पोस्ट करता हूँ। एक मास्टर ने मुझे मैसेज किया कि, आपके पोस्ट कई लोगों को भ्रमित कर रहे हैं, इसलिए उन्हें पोस्ट न करें। फिर तुरंत मुझे गुस्सा आगया और मुझे लगा कि मैंने जो भी किया वह सही है, वह गलत है, और मैं तुरंत यह जवाब देना चाहा कि, अगर आपको पसंद है, तो पढ़ें नहीं तो नजरअंदाज करें। लेकिन तुरंत ही मैंने फैसला अध्याय में जो कहा, उसे याद किया: हर हाल में आपको यह निर्णय लेना होगा कि, दोनों गलत हैं या दोनों सही हैं। इसका अनुसरण करके शांतिपूर्ण स्थिति में पहुंचने के बाद, मैंने इस तरह से उत्तर दिया - हाँ, यह सही है कि कुछ लोग मेरे पोस्ट पढ़ने पर भ्रमित हो सकते हैं, लेकिन मैं इसलिए पोस्ट कर रहा हूँ क्योंकि समूह में बहुत लोग हैं जो मेरी पोस्ट को पढ़ने की लायक है। हर पोस्ट सब को उपयुक्त नहीं होती, इसलिए अगर मेरी पोस्ट आपको परेशान करती है, तो कृपया उन्हें अनदेखा करें। इस उत्तर के बाद उन्होंने फिर से जवाब नहीं दिया। कुछ दिनों के बाद मैंने जो पोस्ट किया, वह उस मास्टर को भी पसंद आया, और उन्होंने लाइक भी किया। जिसे देखने के बाद मुझे अपनी साधना पर खुशी महसूस हुई। ** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें <http://darmam.com/library.html>